करौली-हिंडौन भास्कर

नीर की पीर मिटाने को बढ़े हाथ

राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से ग्राम गौरव संस्थान ने डांग क्षेत्र के गांवों में जल संरक्षण की जगाई अलख

सुखदेव डागुर| करौली

डांग क्षेत्र में अभावपूर्ण जिंदगी के साथ पेयजल समस्या से जूझने वाले कई गांवों के लोगों ने नजीर पेश की है। परंपरागत जल स्रोतों के रूप में जगह-जगह धर्मताल,पोखर व पैगारों का नवनिर्माण कर जल संरक्षण का प्रेरणादायी संदेश भी दिया है। डांग के सुदूर इलाकों में अब पेयजल समस्या का कहीं हद तक स्थायी समाधान होने से तस्वीर बदली है। वहीं सिंचाई की सुविधा मिलने से वर्षा आधारित पहाडी क्षेत्र में भी रबी व खरीफ की खेती लहलहाने लगी है। यह सब ग्राम गौरव संस्थान,सुक्कापुरा टीम की ओर से लोगों में जल संरक्षण की अलख व चेतना पैदा करने से ही संभव हुआ है।

गौरतलब है कि दुर्गम बीहड़ डांग इलाकों में मूलभूत सुविधाओं से महरूम लोगों की मुख्य रूप से पेयजल की पहाड़ सी पीड़ा को महसूस करते हुए जिले के गांव विरहटी के सुक्कापुरा में स्थापित ग्राम गौरव संस्थान ने जल संरक्षण कार्यक्रम चलाया। ग्रामीणों ने भी पीर की नीर मिटाने के लिए घर-घर से चंदा एकत्रित कर राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से जगह-जगह पोखर,पैगारे व धर्मताल बनाए हैं। बानगी के तौर पर बरकी, कूलराकी,लखरुकी,खोतेकी, नरेकी,राहिर,अलबतकी व चौबेकी आदि गांवों में हुए कार्यों की बहुउपयोगिता व सफलता की कहानी स्थानीय लोगों की जुबानी सुनीं जा सकती है। डांग में पेयजल समस्या से निजात मिलने पर संस्थान ने अब नाबार्ड के सहयोग से जल संरचना के अन्य कार्य कराने का बीडा उठाया है। खास बात यह है कि इसमें जनसहभागिता के लिए स्वयं ग्रामीण भी हाथ बढ़ा रहे हैं। जबकि ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज योजनाओं के कार्य यहां धरातल पर कम ही दिखे। इससे जल संरक्षण कार्यक्रम व मनरेगा कार्यों की पोल खुलती है। ग्रामीणों का मानना है कि यही कार्य सरकार चौगुनी राशि में पूरी करती,जो जल सभा ने कम लागत में कर दिखाया।

अलबतकी गांव के किसान हलकू पटेल ने बताया कि 8 साल पहले संस्थान के सहयोग से 1 लाख 85 हजार लागत का पैगारा बनाया। जलोड मिट्टी के ठहराव से खेत बना और अब धान के अलावा गेहूं की फसल लेने वाला भी वह अकेला है। करीब 7 बीघा में तीन घरों के लोगों ने 36 क्विंटल गेहूं पैदा किया है। इसी प्रकार राहिर व चौबेकी में ढलार की पोखर में कांटो की बाड के साथ फिलहाल सिंघाडा और रिसावित पानी से धान लहलहा रहा है। इस 9 किमी लंबे नाले में कई जगह पैगारे व पोखर बने हुए हैं,जिनका ग्रामीण भरपूर लाभ ले रहे हैं। इस दौरान जल संरक्षण व संरचना के कार्यों में सहभागी टीम के सदस्य जगदीश,राधाकृष्ण,रामभजन,समयसिंह,ठाकुरसिंह, गिर्राज, गांगीलाल,करणसिंह,गणेश व जगन्नाथ आदि मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि ये सभी सदस्य पूर्व में तरूण भारत संघ में कार्यकर्ता थे।

धर्मताल-पोखर व पैगारों से बदली डांग की तस्वीर,खेती को सिंचाई का लाभ मिला और पेयजल समस्या का हुआ समाधान

करौली. पांच गांवों के मवेशी सहित ग्रामीणों की प्यास बुझाने में वरदान साबित हुई बरकी की पोखर।

करौली. अलबतकी में पैगारा बनने से पहाडी भूमि पर भी धान की फसल उगने लगी।

एक पोखर से पांच गांवों को पानी

डांग व पहाडी क्षेत्र का गांव बरकी,यूं तो कैलादेवी ग्राम पंचायत का हिस्सा है,मगर पंचायत मुख्यालय से जर्जर रास्तों के बीच दूरी बहुत अधिक है। यहां लोग चार साल पहले तक पीने के पानी के लिए टैंकरों पर ही पूरी तरह निर्भर थे,मगर अब बरकी गांव में ग्राम गौरव संस्थान व राजीव गांधी फाउंडेशन के संयुक्त सहयोग से बनाई गई पोखर इनके लिए जीवन रेखा बन गई है। इस पोखर से बरकी सहित कूलराकी,लखरुकी,खातेकी व नरेकी गांव के लोग गर्मियों के दिनों में मवेशी सहित अपनी भी प्यास बुझा लेते हैं। ग्रामीण रामनारायण,रामभज न,शिवचरण,हरिसिंह,रामलखन मीना,प्रभू,जगदीश व समयसिंह आदि ने बताया कि आंक वाले स्थान पर पहले राजीव गांधी फाउंडेशन के सहयोग से छोटा एनिकट बनाया गया था। जिसे चार साल पहले ग्राम गौरव संस्थान ने स्थानीय ग्रामीणों की एक जल समिति बनाकर पुनर्निर्माण के तौर पर ऊंचाई बढ़ाई गई और अब पांचों गांव लाभांवित हो रहे हैं।

एनिकट की ऊंचाई बढे तो सिंचाई का मिले लाभ

इस एनिकट की भराव क्षमता 11 फिट है, अगर यह 5 फिट और बढ़ा दी जाए तो इसका पानी, पीने के अलावा सिंचाई के काम भी आ सकता है और 350 परिवारों को फायदा मिले। हालांकि इस एनिकट के रिसावित पानी से एक किसान गोपाल मीना ने पहली बार गेहूं की खेती कर 50 क्विंटल अनाज पैदा किया है। जबकि यहां सिर्फ वर्षाआधारित खेती होने से बाजरा,धान की ही फसल होती है।

निर्माण का यह तरीका

ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकर्ता समयसिंह व जगदीश ने बताया कि संस्था की ओर से सीमेंट,कारीगर व पानी उपलब्ध कराया जाता है और ग्रामीणों की ओर से बजरी,खंडा व श्रम मुहैया कराया जाता है। स्थानीय लोगों की देखरेख में यह कार्य गुणवत्तापूर्ण व कम लागत में पूर्ण हो जाता है। यही कारण है कि डांग के लोग अब जल संरचना के इन कार्यों में बेहद रुचि ले रहे हैं। संस्था डांग के पहाडी व ढलान इलाकों में जल संरक्षण के लिए पोखर,पैगारे व धर्मताल बनाने का काम युद्धस्तर पर कर रहा है। बरकी पोखर के कार्य पर 185400 की राशि जनसहयोग से और संस्थागत 179110 रुपए खर्च हुए हैं।